

رُمُوزِ اَوْقَافِ

किसी जुबान के अहले जुबान जब गुप्तगू करते हैं तो कहीं ठहरते हैं, कहीं नहीं ठहरते, कहीं कम ठहरते हैं, कहीं ज़्यादा ठहरते हैं। इसलिए अहले इल्म ने कुरान अज़ीम में ठहरने न ठहरने की जगहों पर अलामतें बना दी हैं जिनको 'رُمُوزِ اَوْقَافِ' कहते हैं, और वह हैं --

○

जहाँ बात पूरी हो जाती है, वहाँ छोटा सा दायरा बना देते हैं। यह हकीकत में गोल ت है जो बसूरत 'ة' लिखी जाती है। इस पर ठहरना चाहिए। अब 'ة' तो नहीं लिखी जाती, छोटा सा दायरा बना दिया जाता है। इस को आयत भी कहते हैं।

م

इस पर ज़रूर ठहरना चाहिए।

ط

इस पर ठहरना चाहिए। मगर यह अलामत वहाँ होती है जहाँ मतलब पूरा नहीं होता और बात कहने वाला अभी कुछ और कहना चाहता है।

ع

यहाँ ठहरना बेहतर है और न ठहरना जायज़ है।

ز

यहाँ न ठहरना बेहतर है।

ص

यहाँ मिला कर पढ़ना चाहिए। लेकिन अगर कोई थक कर ठहर जाए तो छूट है।

ط

यहाँ मिला कर पढ़ना बेहतर है।

س

यहाँ ठहरना नहीं चाहिए।

٣

इस अलामत का मतलब है ठहर जाओ। यह अलामत वहाँ इस्तेमाल की जाती है जहाँ पढ़ने वाले के मिला कर पढ़ने का इहतिमाल हो।

٤

यहाँ थोड़ा ठहरना चाहिए, लेकिन साँस न टूटे।

٥

यहाँ 'سے' की बनिस्वत ज़्यादा ठहरना चाहिए, लेकिन साँस न टूटे।

٦

यह अलामत अगर इबारत के अन्दर हो तो हरगिज़ नहीं ठहरना चाहिए। अगर आयत के ऊपर हो तो बाज़ मानते हैं कि ठहरना चाहिए और बाज़ मानते हैं कि न ठहरना चाहिए, लेकिन ठहरा जाए, या ना ठहरा जाए मतलब में खलल वाक़े नहीं होता।

٧

यह अलामत है कि इस जगह बाज़ के नज़दीक आयत है।

٨

यह अलामत दो दो कर के करीब करीब आती हैं। उन दोनों में से किसी एक पर ठहरना चाहिए और एक पर नहीं।

दीगर अलामतें

٩

रुकू की अलामत है

١٠

सिजदे की अलामत है